सांवली मालकिन

इ हरिकुमार

रूपांतर किया है पूर्णिमा वर्मन और रीना तंगचन ने

1

साहित्य संगम के इस अंक में प'स्तुत है इ हरिकुमार की मलयालम कहानी का हिन्दी रूपांतर "सांवली मालकिन"। रूपांतर किया है पूर्णिमा वर्मन और रीना तंगचन ने ।

सांवली मालकिन

इ हरिकुमार

रूपांतर किया है पूर्णिमा वर्मन और रीना तंगचन ने

हर रोज़ झोपड़ी के चबूतरे पर बैठी हुई सुलू पिता को पगडण्डी से ऊपर जाते हुए देखकर सोचती है — मेरी मां कब आएगी?

कल रात उसने सपने में मां को फिर देखा। मां ने पास आ कर सुलू को गले से लगाया। हर रोज़ वह यही सपना देखती है – मां आती है, उसे गले से लगाती है, गोद में बैठाती है, उसके बालों को सहलाती है। रोज़ सपने में मां को देखती तो है पर मां का चेहरा याद नहीं रहता। फिर भी मिलने का संतोष बना रहता है।

वह रोज़ सुबह पिता से कहती है अप्पा, मैने एक सपना देखा। उस समय तामि भी नहीं पूछता कि चार साल की सुलू ने सपने में क्या देखा। उसे मालूम है कि सुलू कौन सा सपना देखती है। वह रोज़ एक ही सपना तो देखती है और काम पर जाते समय याद दिला देती है कि वह मां को वापस लाने की याद रखे।

हर रोज ऐसे ही सुबह होती है। सुलू का सारा दिन झोपड़ी के बाहर इस चबूतरे पर बीतता है...मां का इंतज़ार करते ...अकेले.. खेलते हुए ...भूखे पेट... कभी कभी कांजी पी कर....देर तक शाम ढले पिता के काम से वापस लौटने तक

मालिक की हवेली के सामने कड़ी दोपहर में तपते हुए सूरज के नीचे तामि खड़ा है। दूर छायादार वृक्ष उसे हाथ हिला कर अपनी ओर बुलाते हैं लेकिन तामि को ज़मींदार का इंतज़ार है। वह बार बार खड़े हो कर ऊपर देखता है और बैठ जाता है। आधे घंटे के कठिन इंतज़ार के बाद ज़मींदार का नौकर संदेश देता है — "मालिक से आज मुलाकात नहीं होगी।"
तामि बिना मुलाकात किये कैसे चला जाए?

जब तामि की पत्नी ज़मींदार के घर आई थी तो यह तय हुआ था कि कर्ज के पैसे वापस करते ही वह पत्नी को घर वापस ले आएगा। लेकिन ऐसा हो ही नहीं पाया। आज भी तामि के हाथ ख़ाली हैं। दो हज़ार रूपये का कर्ज़ लिया था उसने। दो हज़ार रूपये वह कहां से लाए? और उसका ब्याज? वह तो उसे मालूम भी नहीं कि कितना हो गया होगा। फिर भी वह ज़मीदार से पूछना चाहता है कि क्या एक हफ्ते के लिये वह अपनी पत्नी को घर ले जा सकता है? वह इस तरह की ज़िन्दगी से तंग आ गया है।

बाहर खड़े हुए तामि अंदर देख सकता है। पूर्व के द्वार के भीतर अंधेरा है। अंधेरे के अंदर से मालकिन बाहर आई और तामि को खड़े देख कर पूछा,
"तामि, यहां कैसे खड़े हो?"
"ऐसे ही मालकिन।"
"तुम्हें गाभिन नंदिनी गाय दी थी। सुना है हफ्ते भर पहले ब्याई है।उसको वापस कब कर रहे हो?"
"दो दिन बाद वैद्य ने एक दवा देने को कहा है, उसके बाद नंदिनी को वापस कर दूंगा।" तामि ने जवाब दिया।
"उसे जल्दी वापस कर दो। हर किसी को दूध चाहिये।"
"ठीक है, मालकिन।"

इसके बाद भी तामि खड़ा ही रहा।
मालकिन ने पूछा, "अब क्या चाहिये?"
तामि कुछ नहीं बोला। मुंह झुका कर सिर खुजाने लगा।
मालकिन ने पूछा, "बोलो तामि क्या बात है?"
"हुजूर मैने लक्ष्मी के बारे में मालिक से कहा था....
यह सुनते ही मालकिन मुँह फुला कर बिना कुछ जवाब दिये अंदर चली गयी। तामि ने उसे घर के अंधेरे में गुम होते हुए देखा। हर रोज वह तामि और उसकी बेटी के लिये खाने का कुछ सामान देती है लेकिन आज उसने वह भी नहीं दिया।

सांवली मालकिन

इ हरिकुमार

रूपांतर किया है पूर्णिमा वर्मन और रीना तंगचन ने

2

अब तामि क्या करे? क्या वापस घर लौट जाए? सुलू मां के बारे में पूछेगी तो वह क्या जवाब देगा? फिर किसी और दिन का वायदा करना होगा... यह सोचते हुए तामि भारी कदमों से धीरे धीरे घर लौट पडा।

हवेली की दूसरी मंज़िल से दो आंखें घने पेड़ों के बीच से गुज़रते हुए तामि का पीछा करती हैं — जब तक वह आंखों से ओझल नहीं हो जाता। इसके बाद लक्ष्मी नीचे आकर दोपहर के भोजन के लिये ज़मींदार की प'तीक्षा करती है। पान में लौंग, इलायची, कत्था, चूना सजा कर बीड़ा बनाती है। उसे करीने से पीतल की थाली में सजाती है। बिस्तर की चादर बदलती है। तकिये का खोल बदल कर उसे ठीक से लगाती है। कपड़े बदल कर सजती-संवरती है और गुलाबजल से सुवासित होकर ज़मींदार की प'तीक्षा करती है।

कभी वह खिड़की पर खड़ी होती है कभी फर्श पर बैठती है कभी खेत की ओर पेड़ों को देखती है और कुछ विचार उसके मन को मथने लगते हैं — अभी तक उसका पति घर पहुंच गया होगा... सुलू ने अपनी मां के बारे में पूछा होगा ... तामि ने फिर से अगली बार का वायदा किया होगा...फिर सुलू ने क्या जवाब दिया होगा?

खट...खट...खट...
लक्ष्मी खड़ी हो जाती है। पदचाप नज़दीक आती है। दरवाज़ा खुला है। ज़मींदार आता है और दरवाज़ा बंद कर के सिटकनी चढ़ा देता है। वेष्टि को उतार कर खूंटी पर टांग देता है और स्नान करने चला जाता है।

लक्ष्मी पलंग के पायताने बैठ कर पान बना रही है। ज़मीदार कहता है, "तामि आया था।" लक्ष्मी चुप रहती है।
"तुम्हें पता है वह किस लिये आया था?"
"हूँ।"
"तुम सोचती हो मैं तुम्हें भेज दूँगा?"
लक्ष्मी चुपचाप ज़मींदार के सीने पर हाथ फेरती है। उसकी श्यामल उंगलियां ज़मींदार के गोरे सीने पर बालों को सहलाती हैं। वह लक्ष्मी को आलिंगन में लेते हुए पास बैठने की जगह बनाता है। लक्ष्मी को पान की सुगंध पसंद है। पान के साथ मिली जुली ज़मींदार के शरीर की गंध लक्ष्मी को आकर्षित करती है। लक्ष्मी के कोमल शरीर का स्पर्श करते हुए वह पान का रस निगल कर कहता है — "तुम्हें मालूम है मैने तामि को **2000** रूपये दिये हैं।"
"हूँ" - लक्ष्मी सिर्फ इतना ही बोलती है।

ज़मींदार को यही पसंद है। ऐसा न करने पर वह नाराज़ हो सकते हैं। पर इस समय वह हुंकारी देना भूल गयी। इसके दिमाग में पुराना दृष्य घूमने लगा है। हवेली के बाहरी आंगन में वह तामि के पीछे डरती हुई खड़ी है। ज़मींदार दूसरी मंजिल के जंगले को छोड़ कर नीचे आता है और लक्ष्मी से पूछता है मेरी बात तुम्हें याद है। लक्ष्मी कहती है, "हूं।"

"जब तुम दो हज़ार रूपये ब्याज के साथ वापस करोगे उसे समय इसे वापस ले जाना।"
तामि ने अपने कंधे पर गमछे को ठीक करते हुए, धोती के छोर से मुंह को ढ़कते हुए सिर झुका कर कहा था, "जी हुजूर"
फिर उसने लक्ष्मी से पूछा था, "तुम्हारा नाम क्या है?"
"लक्ष्मी", उसने कहा था।
ठीक है, दक्षिण में रसोई के पास जाओ वहां मालकिन होगी।"

लक्ष्मी के लिये माहौल परिचित था। धान कूटना, उड़ाना, अनेक नौकर नौकरानियां इस काम में लगे हुए - लेकिन इस समय उसकी परिस्थिति अलग थी। वह मजदूरी करने नहीं आई थी बंधुआ थी। उसे उनकी हुंकारें उनके चेहरे और हाव भाव रूचिकर नहीं लगे। न ही उन लोगों को लक्ष्मी का इस प'कार आना अच्छा लगा। दोपहर में वह अन्य महिलाओं के साथ भात और कांजी खाने बैठी। शाम के समय सभी कामगार औरते अपनी दिहाड़ी लेकर चली गयीं। लक्ष्मी अकेली रह गयी। उसे पति और बेटी की याद आने लगी। अंधेरा धीरे धीरे घना हो रहा था। उसका मन दुख से भर गया और वह रोने लगी।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इस रात में वह क्या करे। मालकिन का व्यवहार कठोर था पशु के समान। लक्ष्मी ने सुना मालकिन के रसोईघर में नौकरानी से बात कर रही थी। लक्ष्मी को मालूम है - उस नौकरानी का नाम माधवी है। छोटी खिड़की के पीछे रात का भोजन तैयार करते और आते जाते वे लोग लैंप के प'काश में दिखाई पड़ रहे थे।

इसी समय एक लालटेन का प'काश उसके आया। अब लालटेन ऊंची उठ कर ठीक उसके चेहरे के सामने थी — और ज़मींदार के चेहरे पर अनेक प'श्न चिह्न। वह बिना कुछ बोले धीरे धीर दूर चला गया। थोड़ी देर में माधवी और

सांवली मालकिन

इ हरिकुमार
रूपांतर किया है पूर्णिमा वर्मन और रीना तंगचन ने

3

मालकिन उसके पास आये। नौकरानी के हाथ में एक कटोरी में तेल, सुवासित साबुन, धोवी के धुले और इस्त्री किये कपड़ों का एक जोड़ा था। लक्ष्मी नौकरानी के साथ तालाव पर चली गयी।

नहाने के वाद वह अच्छे कपड़े पहन कर घर लौटी थी। रसोईघर में उसे अच्छा खाना दिया गया था। उस समय नौकरानी का व्यवहार वेहतर था। उसे याद आया कि दोपहर में कांजी और चावल देते समय उसका व्यवहार कितना कठोर था। इस समय मालकिन का व्यवहार भी दयापूर्ण था।

आज इस समय वह ज़मीदार के कंधे पर लेटे लेटे सोंच रही है। किस तरह वह ओखलवाले कमरे से रसोईघर और रसोईघर से सीढ़ियां चढ़कर ऊपर ज़मीदार के शयनकक्ष तक पहुंच गयी है। दिन...महीने...साल...धीरे-धीरे वीतते गये हैं। वह धीरे-धीरे इस माहौल की अभ्यस्त हुई है। उसे यह भी नहीं याद कि वह कौन है। कभी कभी उसे अनुभव होता है — मेरा पति, मेरी वेटी, मेरा घर मेरा इंतज़ार कर रहे हैं । क्या उसके जीवन का कोई अर्थ है?
"हूँ ।" अचानक उस तंद्रा से आकर वह जवाव देती है, "मैं अपनी वेटी को देखना चाहती हूँ।"
"हूँ ", एक भारी आवाज़ के साथ ज़मींदार हामी भरता है।

अगली सुवह रसोईघर में लक्ष्मी ज़मीदार के लिये चाय वनाते समय मालकिन ने वताया, "आज तुम्हारी वेटी आएगी।
"
"अच्छा", वह कहती है।
"ज़मींदार ने तुम्हें नहीं वताया?"
"नहीं मालकिन।"
"तामि को किसी से संदेश भेजा था।"

वेटी से मिले विना वहुत समय वीत गये — दो साल या तीन साल। सालों का गणित भी वह भूल गयी है। मेरी वेटी वड़ी हो गयी होगी

लक्ष्मी चाय लेकर ज़मींदार के कमरे में चली गयी। ज़मींदार उठ कर लक्ष्मी के इंतज़ार में वैठा था उसने सिरहाने तकिया लगा कर पीठ को पीछे टिका दिया। पैरों को सीधा किया और सामने फैला दिया। लक्ष्मी उसके पायताने वैठ गयी।
"मेरी वेटी को वुलाया है?" लक्ष्मी के प्रश्न में कृतज्ञता है।

"हूँ", भारी आवाज़ के साथ ज़मींदार ने काहा। वह सुवह आएगी और दोपहर वाद वापस चली जाएगी।"
"ठीक है।" लक्ष्मी ने जवाव दिया।
"तुम्हारी वेटी को देने के लिये मैने नौकर से दो फ्राक मंगवाए हैं।"
"अच्छा।" वह प्रसन्नता और संतोष से ज़मींदार को देखती है।
"तुम जानती हो यह सव काम मैं क्यों करता हूं ?"
"हूं "
"क्यों ?"
"
"मैं तुमसे प्रेम करता हूं । यह तुम समझती हो और हर रोज़ मेरा ख्याल रखती हो।"
"हूँ।"

लक्ष्मी वेचैनी से इधर उधर टहलती है। गलियारों से कमरों और रसोई से होते हुए उसकी आंखें सीधे द्वार पर आ जाती हैं। द्वार के वाद सूर्य के प'काश में खुले खेत हैं। वह मन की आंखों से देखती है — एक छोटी लड़की सड़क पर उसकी ओर चली आ रही है। उसका मन करता है वह सीढ़ियां उतर कर नीचे आ जाए और वाहर जाकर प'तीक्षा करे। पर वह ऐसा नहीं कर सकती। ज़मींदार की आज्ञा है कि वह वाहर न जाए। वह चारदीवारी के भीतर वने तालाव तक जा सकती है पर उसके वाहर नहीं। वाहरी आंगन में भी जाना मना है। तामि घर में काम करने के लिये वहां आता-जाता है उस समय भी वाहर निकलना या उससे मिलना लक्ष्मी के लिये मना है।

जव तामि खेत में काम करता है तव वह भीतर से उसे देख सकती है पर तामि उसे नहीं देख सकता।

वह फावड़े से ज़मीन खोदता है। थक कर फावड़े को वगल में रख कर सुस्ताता हुए हवोली की ओर देखता है – शायद किसी खिड़की से लक्ष्मी दिख जाए। पर वह उस समय जल्दी से अंदर चली जाती है। वह ज़मींदार से डरती है। ज़मीदार की क्रूरता की कहानियाँ उसने अनेक लोगों से सुनी हैं पर लक्ष्मी के सामने ज़मींदार हमेशा ही सदय वना रहा है।

सांवली मालकिन

इ हरिकुमार
रूपांतर किया है पूर्णिमा वर्मन और रीना तंगचन ने

जब भी ज़मींदार पैसे लाता है वह अंदर ही अंदर डरती है – क्या उसे यह सब छोड़ कर जाना होगा? इस समय वह शर्त— उसे याद आती है। शर्त का क्या परिणाम होगा, यह उसे ठीक से मालूम नहीं। क्या तामि ने पैसे वापस कर दिये तो उसे यह सब छोड़ कर जाना होगा? क्या तामि पैसे वापस कर देगा? क्या तामि के पास इतने पैसे होंगे? इस समृद्धि में रहते हुए जब भी बेटी का भोला चेहरा याद आता है उसे यह सब निरर्थक लगने लगता है।

नौकर ने रसोई के दरवाज़े से लक्ष्मी को पुकारा और एक पैकेट थमाया। लक्ष्मी ने पैकेट खोले — दो सुंदर फ्राकें। एक छोटे लाल फूलों वाली नीली फ्राक और दूसरी पीली हरी नाशपातियों वाली। साथ में दो चड्डियाँ। उसके ख्याल में आया इन्हें पहन कर सुलू कितनी सुंदर लगेगी। सुलू ने आजतक इतनी सुन्दर फ्राकें कभी नहीं पहनीं।

तामि सुलू को लेकर पूर्व के रसोईघर की ओर पहुँच गया। माधवी सुलू को लेकर अंदर आ रही है। लक्ष्मी उन्हें देखकर आंसू नहीं रोक पाती। कितना दुख है उसे – मैं अपनी बेटी का चेहरा तक भूल गयी।

सुलू आश्चर्य से अपरिचित लोगों को देखने लगी। यह उसकी मां नहीं हो सकती। उसकी नज़रें मां को इधर उधर ढूँढने लगीं। लक्ष्मी ने पुकारा, "बेटी, इधर आओ" और सुलू को अपनी गोद में बैठा लिया। सुलू आश्चर्य से लक्ष्मी को देखने लगी। सोचने लगी – यह अच्छे कपड़े पहनने वाली, तेल और साबुन से महकने वाली औरत कौन है? उसने ऐसी ठाठदार औरत पहले कभी नहीं देखी। उसी समय मालकिन ने अंदर से आकर लक्ष्मी से पूछा, "तुम्हारी बेटी आई ?"

सुलू डर गयी। उसकी मां कहां है? उसे यह औरत नहीं चाहिये सिर्फ अपनी मां चाहिये। उसे वहां खाने की अच्छी अच्छी चीज़ें मिलीं पर खाते हुए भी वह यही सोचती रही – ये सब कौन हैं? मेरी मां कहां है? खाने के बाद लक्ष्मी ने सुलू को तेल लगा कर नहला दिया। और अच्छी फ्राक पहनाते हुए बोली, "देखो सुलू मां तुम्हारे लिये नयी फ्राक लायी है।"

सुलू यह सुन कर खुश हो गयी, पर उसकी मां है कहां? नयी फ्राक पहने हुए भी उसकी आंखें मां को ही खोजती रहीं। पूछते हुए उसे डर लगा। वह किससे पूछे कि मेरी मां कहां है?

शाम का सूरज ढलते ही मुण्डियान खेत के साये लंबे होने लगे। खेत के सामने कारकुन्न पहाड़ है। इस समय इसके पेड़ों पर चिड़ियाँ लौटने लगीं। धान कूटने वाली औरतें भी घर जाने लगीं। खेत के बीच बने झोपड़ों में रोशनी जल गयी है। मजदूरों ने सूखी पत्तियों को इकट्ठा कर के आग लगा दी है। अंधेरे में धुएं के इस ओर खड़ा तामि सुलू का इंतज़ार कर रहा है।

नौकर तामि से बातें करने लगता है।
"ज़मींदार ने सुलू के लिये दो फ्राक मंगवाए हैं। तुम्हारी पत्नी किस्मत वाली है। वह यहां आराम से है। उसे वापस मत बुलाओ। बाद में तुम्हारी बेटी भी यहीं आ जाएगी।"
तामि कोई जवाब नहीं देता। सिर्फ सोचता है – मैं क्या कहूँ। दो हज़ार रूपये और उसका ब्याज मैं कैसे चुकाऊंगा। न मैं कभी पैसे चुका पाऊँगा न कभी लक्ष्मी लौटेगी।

खेतों के बीच बनी मेड़ों पर से गुज़रते नौकर नौकरानियों के बीच उसे एक नौकरानी के साथ सुलू दिखाई दी। वह ज़ोर ज़ोर से बातें कर रही थी। दौड़ कर पास आई। तामि ने उसे गोद में उठा लिया। नौकरानी ने एक छोटी थैली में दो फ्राकें तामि को पकड़ा दीं, बोली, "तुम्हारी बेटी के लिये उपहार में दी हैं।"

तामि ने सुलू को चूमा और पूछा, "मां को देखा?"
"मां?" सुलू आश्चर्य से बोली। "मैंने मां को नहीं देखा।"
"ज़मींदार के घर में कौन थीं?"
"वहां? एक गोरी मालकिन और एक सांवली मालकिन। फिर ज़रा सा रूक कर बोली, "वह सांवली मालकिन बहुत अच्छी है। उसने मुझे यह फ्राक दी।"
"वह तुम्हारी मां है।"
"नहीं, वह मेरी मां नहीं है। वह ज़मींदारिन है। सांवली मालकिन।" और सुलू चुप हो गयी। कुछ सोचने लगी।

तामि दिया जला रहा है। दीपक की रोशनी में सुलू का छोटा सा चेहरा चमक रहा है। इस समय भी सुलू कुछ सोच रही है। बहुत सी बातें सुलू के छोटे से दिल में बार बार आ रही हैं। वह सोच रही है कि यह सांवली मालकिन कौन है.

सांवली मालकिन

इ हरिकुमार

रूपांतर किया है पूर्णिमा वर्मन और रीना तंगचन ने

..वह मुझे प्यार क्यों करती है... वह मेरे लिये फ़ाक क्यों ख़रीद कर लायी... इन सवालों के जवाब सुलू को नहीं मालूम। वह धीरे से पुकारती है, "अप्पा..."

"क्या है बेटी...?"

"मेरी मां कब आएगी?"

By courtesy of the Internet Magazine Abhivyakti.
[www.abhivyakti-hindi.org]